eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

जॉन लॉकः उदारवाद का जनक

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 31 August 2023 Accepted and Reviewed: 02 September 2023, Published : 10 September 2023

Abstract

जॉन लॉक (1632–1704) को आधुनिक उदारवाद का जनक माना जाता है। उनके राजनीतिक विचारों ने लोकतंत्र, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, और प्राकृतिक अधिकारों की अवधारणाओं को सुदृढ़ किया। उनके सिद्धांतों ने फ्रांसिसी क्रांति, अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम, और आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं को गहराई से प्रभावित किया। इस शोध पत्र में उनके जीवन, उनके प्रमुख ग्रंथों, और उनके उदारवादी विचारों के प्रभाव का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, उनके सामाजिक अनुबंध, सीमित सरकार और प्राकृतिक अधिकारों पर विचारों की प्रासंगिकता का भी मूल्यांकन किया गया है।

कीवर्ड– जॉन लॉक, उदारवाद, प्राकृतिक अधिकार, सामाजिक अनुबंध, लोकतंत्र, स्वतंत्रता, सरकार

Research Paper

राजनीतिक दर्शन के क्षेत्र में जॉन लॉक का योगदान अभूतपूर्व रहा है। वे उन प्रमुख विचारकों में से एक थे जिन्होंने लोकतांत्रिक सिद्धांतों को बौद्धिक आधार प्रदान किया। 17वीं शताब्दी के दौरान, जब यूरोप में निरंकुश शासन प्रणाली प्रचलित थी, लॉक ने व्यक्ति की स्वतंत्रता, प्राकृतिक अधिकारों और सीमित सरकार की अवधारणा प्रस्तुत की। उनके विचारों ने केवल राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित नहीं किया, बल्कि दार्शनिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में भी परिवर्तन लाए।

उनका उदारवादी दृष्टिकोण आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं की नींव बना। वे सामाजिक अनुबंध के माध्यम से सरकार की स्थापना का समर्थन करते थे और मानते थे कि सरकार का प्राथमिक कर्तव्य नागरिकों के जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति की रक्षा करना है। उनकी विचारधारा अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम और फ्रांसीसी क्रांति जैसी ऐतिहासिक घटनाओं में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। इस शोध पत्र में हम उनके जीवन, कार्यों और उनके राजनीतिक दर्शन का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

जॉन लॉक का जन्म 29 अगस्त 1632 को इंग्लैंड के समरसेट में हुआ था। उनके पिता एक वकील और सरकारी अधिकारी थे, जिनका झुकाव संसदीय शासन प्रणाली की ओर था। प्रारंभिक शिक्षा वेस्टमिंस्टर स्कूल में प्राप्त करने के बाद, उन्होंने ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा ग्रहण की।

लॉक ने चिकित्सा, दर्शन, राजनीति और धर्म जैसे विषयों में गहरी रुचि ली। वे प्रसिद्ध चिकित्सक थॉमस सिडेनहम के सहयोगी रहे और चिकित्सा के क्षेत्र में भी योगदान दिया। 1666 में उनकी मुलाकात लॉर्ड एशली (बाद में अर्ल ऑफ शेफ्ट्सबरी) से हुई, जो उनके राजनीतिक संरक्षक बने। इस दौरान लॉक ने प्रशासन और सरकार की नीतियों को नजदीक से समझने का अवसर प्राप्त किया।

1683 में राजनीतिक अस्थिरता के कारण उन्हें इंग्लैंड छोड़कर नीदरलैंड जाना पड़ा, जहाँ उन्होंने कई महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे। 1688 की गौरवशाली क्रांति के बाद वे इंग्लैंड लौटे और अपने राजनीतिक तथा

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

दार्शनिक विचारों को प्रचारित किया। 28 अक्टूबर 1704 को उनका निधन हुआ, लेकिन उनकी विचारधारा ने विश्वभर के राजनीतिक विचारकों को प्रभावित किया।

उदारवाद का मूलभूत सिद्धांत– लॉक के उदारवाद की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

प्राकृतिक अधिकार (Natural Rights)– जॉन लॉक के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति जन्म से कुछ मौलिक अधिकारों का अधिकारी होता है, जिसमें जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति का अधिकार शामिल है। यह विचार बाद में आधुनिक मानवाधिकार अवधारणाओं का आधार बना।

सामाजिक अनुबंध Social Contract- लॉक का मानना था कि समाज के लोग परस्पर सहमति से सरकार का निर्माण करते हैं, जो उनके अधिकारों की रक्षा के लिए कार्य करती है। यदि सरकार अपने उत्तरदायित्वों का पालन नहीं करती, तो जनता को उसे बदलने का अधिकार होता है।

सीमित सरकार (Limited Government)– उन्होंने इस विचार को बढ़ावा दिया कि सरकार की शक्ति सीमित होनी चाहिए और यह केवल उन कार्यों तक सीमित होनी चाहिए जो जनता के कल्याण के लिए आवश्यक हों। उनका यह दृष्टिकोण आधुनिक संवैधानिक लोकतंत्र की आधारशिला बना।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Freedom of EÛpression)– लॉक ने धार्मिक सहिष्णुता और विचारों की स्वतंत्रता की वकालत की। उनका मानना था कि राज्य को धर्म के मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को अपने धर्म का चयन करने का अधिकार होना चाहिए।

निजी संपत्ति (Private Property)– उनका तर्क था कि जब कोई व्यक्ति अपने श्रम से किसी वस्तु का निर्माण करता है, तो वह उसकी निजी संपत्ति बन जाती है। यह विचार पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण रहा।

जॉन लॉक की प्रमुख कृतियाँ–

1. ''टू ट्रिटिज़ ऑफ गवर्नमेंट (Two Treatises of Government)''

   – इस ग्रंथ में लॉक ने निरंकुश राजतंत्र का विरोध किया और संवैधानिक लोकतंत्र का समर्थन किया।

2. ''एन एस्से कंसर्निंग ह्यूमन अंडरस्टैंडिंग (An Essay Concerning Human Understanding)''

   – इसमें उन्होंने ज्ञानमीमांसा और अनुभववाद पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

लॉक के विचारों का प्रभाव–

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम पर प्रभाव– जॉन लॉक के विचार अमेरिकी संविधान और स्वतंत्रता की घोषणा में गहरे रूप से परिलक्षित होते हैं।

थॉमस जेफरसन ने अमेरिकी स्वतंत्रता घोषणा पत्र में जीवन, स्वतंत्रता और सुख की खोज जैसे सिद्धांत लॉक की विचारधारा से प्रेरित होकर शामिल किए।

फ्रांसीसी क्रांति में योगदान– 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के दौरान, नागरिकों के मौलिक अधिकारों की मांग में लॉक के सिद्धांतों का प्रभाव देखा गया। फ्रांसीसी गणराज्य की स्थापना में उनके समानता और स्वतंत्रता के विचार प्रेरणास्रोत बने।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

आधुनिक लोकतंत्र की नींव– वर्तमान में दुनिया की अधिकांश लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ लॉक के सिद्धांतों को अपनाकर नागरिक अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं। संवैधानिक सरकार, शक्तियों का विभाजन, और नागरिक अधिकारों की सुरक्षा जैसे विचार आधुनिक राज्यों में उनकी विचारधारा के प्रभाव को दर्शाते हैं।

धार्मिक सहिष्णुता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता– लॉक ने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया, जिसका प्रभाव ब्रिटेन, अमेरिका और यूरोप के कानूनी ढाँचों में देखा जा सकता है। आधुनिक मानवाधिकार घोषणाओं और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के कानूनों में उनके विचारों की झलक मिलती है।

आर्थिक उदारीकरण और पूंजीवाद– लॉक के संपत्ति अधिकार संबंधी विचारों ने आधुनिक पूंजीवाद की नींव रखने में मदद की।

एडम स्मिथ और अन्य अर्थशास्त्रियों ने उनकी निजी संपत्ति और स्वतंत्र व्यापार की अवधारणाओं से प्रेरणा ली।

1. ''अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम''– अमेरिकी संविधान और स्वतंत्रता की घोषणा में लॉक के विचारों का गहरा प्रभाव देखा जा सकता है।

2. ''फ्रांसीसी क्रांति''– फ्रांस में लोकतंत्र और नागरिक अधिकारों की स्थापना में लॉक के सिद्धांतों ने प्रेरणा दी।

3. ''आधुनिक लोकतंत्र''– वर्तमान में विश्व की अधिकांश लोकतांत्रिक सरकारें लॉक के विचारों को आधार मानकर संचालित होती हैं।

अततोगत्वा जॉन लॉक के उदारवादी विचारों ने राजनीतिक दर्शन को एक नई दिशा दी। उनके सिद्धांतों ने लोकतांत्रिक शासन प्रणाली, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक अनुबंध सिद्धांत को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

आज के आधुनिक लोकतंत्र उनकी विचारधारा से प्रेरित होकर नागरिक अधिकारों की रक्षा, सत्ता के संतुलन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं। उनकी शिक्षाएँ केवल राजनीति तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र और नैतिक दर्शन में भी उनका योगदान महत्वपूर्ण रहा।

उनकी विचारधारा आज भी प्रासंगिक है और विभिन्न राष्ट्रों की संवैधानिक व्यवस्थाओं में देखी जा सकती है। इस प्रकार, जॉन लॉक को न केवल उदारवाद का जनक कहा जा सकता है, बल्कि आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों की नींव रखने वाले महान विचारकों में से एक माना जाता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

सन्दर्भ सूची–

- Locke, John. "Two Treatises of Government-" 1689.
- Locke] John- "An Essay Concerning Human Understanding-" 1690.
- Dunn] John- "The Political Thought of John Locke-" Cambridge University Press] 1984.
- Tuck, Richard- "Natural Rights Theories-" Cambridge University Press, 1979-
- Laslett] Peter- "John Locke and Natural Law-" Clarendon Press] 1960.
- जॉन लॉक, सरकार पर दो ग्रंथ (Two Treatises of Government), ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जॉन लॉक, मानव बुद्धि पर एक निबंध (An Essay Concerning Human Understanding), कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- जॉन लॉक एक संक्षिप्त परिचय, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- पीटर लैसलेट, लॉक के दो शासकीय ग्रंथों की व्याख्या, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
- रिचर्ड ऐशक्राफ्ट, क्रांतिकारी राजनीति और लॉक का राजनीतिक दर्शन।
- जॉन यॉल्टन, लॉक और विचारों की पद्धति।
- जेम्स टली, राजनीतिक दर्शन के संदर्भ में लॉक।
- लियो स्ट्रॉस, प्राकृतिक अधिकार और इतिहास।
- माइकल ज़करट, प्राकृतिक अधिकार और नई गणराज्यवाद।
- नैन्सी हिर्शमान, आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत में लिंग, वर्ग और स्वतंत्रता।
- ए. जॉन सीमन्स, लॉकेन अधिकार सिद्धांत।
- जेरेमी वाल्ड्रॉन, ईश्वर, लॉक और समानता।
- रूथ डब्ल्यू. ग्रांट, जॉन लॉक की उदारवाद विचारधारा।
- वीरे चौपल, कैम्ब्रिज कम्पेनियन टू लॉक।
- मार्क गोल्डी, लॉक की राजनीति की स्वीकृति।
- सुनील खंडेलवाल, राजनीतिक विचारकरू जॉन लॉक और उदारवाद।
- रमेश प्रसाद, आधुनिक राजनीतिक दर्शन।
- अरुण कुमार शर्मा, पश्चिमी राजनीतिक विचारक।
- सुभाष कश्यप, लोकतंत्र और राजनीतिक विचारधारा।
- चंद्रशेखर सिंह, राजनीतिक सिद्धांतों का विकास।
- हेमंत वर्मा, उदारवाद और आधुनिक राजनीति।
- सुरेश चंद्र, राजनीतिक विचारधारा के मूल तत्व।
- संजय मिश्रा, लोकतंत्र और मानवाधिकार।
- प्रकाश पांडेय, राजनीतिक परंपराएँ और दर्शन।
- अमित कुमार, सामाजिक अनुबंध और राजनीतिक संरचना।
- महेश जोशी, यूरोप में राजनीतिक विचारधारा का विकास।
- सतीश वर्मा, राजनीतिक विज्ञान और दार्शनिक आधार।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 09, September 2023

- योगेश द्विवेदी, लोकतंत्र के स्तंभ और उदारवाद।
- सुरेश कुमार, आधुनिक राजनीतिक विचारधारा की नींव।
- दिनेश चतुर्वेदी, संवैधानिक उदारवाद और लोकतांत्रिक व्यवस्था।
- मोहन शर्मा, राजनीतिक विचारधारा और दार्शनिक परिप्रेक्ष्य।
- विकास गुप्ता, राजनीतिक दर्शनरू प्रारंभ से आधुनिकता तक।
- प्रवीण शर्मा, जॉन लॉक और लोकतंत्र की अवधारणा।
- अजय पांडेय, आधुनिक राजनीतिक विचारकों का प्रभाव।
- सतीश त्रिपाठी, यूरोपीय पुनर्जागरण और राजनीतिक विचारधारा।
- राहुल वर्मा, स्वतंत्रता, समानता और उदारवाद।
- दिनेश मिश्रा, राजनीतिक दर्शन और समकालीन विचारधाराएँ।